[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 2450 **G**

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya (B) GE

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) गुर गोविंद तौ एक है, दूजा यहु आकार।

आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार ॥

अथवा

P.T.O.

रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि-हेरि हिहिनहिं।
देखि निषाद बिषादवस धुनहिं सीस पछिताहिं ।।

(ख) संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो न निराश करो मन को।

अथवा

सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल के दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाती है दिगन्त को।

(ग) सुधा धार यह नीरस दिल की, मस्ती मगन तपस्वी की
जीवित ज्योति नष्ट नयनों की, सच्ची लगन मनस्वी की
बीते हुए बालपन की यह, क्रीड़ापूर्ण वाटिका है
वही मचलना, वही किलकना हँसती हुई नाटिका है।

अथवा

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरू मलिका अट्टालिका, प्राकार।

2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (12×4=48)

(क) पश्चिमी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए।

अथवा

रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ बताइए।

(ख) 'गुरुदेव कौ अंग' के आधार पर गुरु के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'केवट प्रसंग' के मानवीय मूल्यों की चर्चा कीजिए।

(ग) 'नर हो, न निराश करो मन को' कविता की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'धूप' कविता में धूप प्रकृति को किस प्रकार प्रभावित कर रही है, स्पष्ट कीजिए।

(घ) बालिका का परिचय कविता मातृत्व के महत्त्व को रेखांकित करती है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में निहित सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

3. टिप्पणी लिखिए : (कोई 3) (6×3=18)

(क) पूर्वी हिंदी

(ख) सगुण काव्य

(ग) भारतेंदु युग

(घ) छायावाद की प्रवृत्तियां

(ङ) नई कविता